पंचपरगनिया साहित्य के विकास में आधुनिक साहित्यकारों का योगदान : एक अध्ययन

विश्वविद्यालय पंचपरगनिया विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच. डी. उपाधि हेतु शोध प्रारूप की रूपरेखा

संकाय: जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष – 2025

शोध निर्देशक:

डॉ. पार्वती मुन्डू

सहायक प्राध्यापिका
नगर महाविद्यालय धुर्वा, राँची

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी:

रमेश पातर

एम.ए. यू.जी.सी- नेट / जे.आर.एफ. जगन्नाथ
स्नातकोत्तर पंचपरगनिया विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

पंचपरगनिया साहित्य के विकास में आधुनिक साहित्यकारों का योगदान: एक अध्ययन

प्रस्तावनाः-

पंचपरगनिया झारखण्ड के पूर्वी क्षेत्र की एक क्षेत्रीय भाषा है। झारखण्डी भाषा, संस्कृति, आज भारत ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना पहचान बना चुकी है। झारखण्डी संस्कृति को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में पंचपरगनिया साहित्यकारों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। पंचपरगनिया साहित्य और संस्कृति का सर्वाधिक उत्थान आधुनिक काल के साहित्यकारों जैसे - राजा उपेन्द्रनाथ सिंह देव, दुखहरण नायक, ज्योतिलाल महादानी, सृष्टिधर महतो, परमानन्द महतो, डॉ. करमचन्द्र अहीर, डॉ. चन्द्रमोहन महतो, प्रो0 दीनबन्धु महतो, राजकिशोर सिंह, संतोष साहु, पदम श्री डॉ. रामदयाल मुण्डा, आशुतोष कोईरी, जैसे और भी महान विभूतियों ने अपना योगदान दिया है। इस आधुनिक दौर में पंचपरगनिया साहित्य के विभिन्न विद्याओं में अनेक रचनाएँ मिलती है। वर्ष 2017 ई0 में डॉ. पराग किशोर सिंह के किताब ‘आधुनिक पंचपरगनिया साहितकार आर कलाकार’ प्रकाशित हुई जिसमें बहुत सारे आधुनिक साहित्यकारों का वर्णन मिलता है। पंचपरगनिया भाषा का लोक साहित्य बहुत समृद्ध है। लोक साहित्य की परम्परा **हमेशा** से ही चलते आ रही है। उसके बाद शिष्ट साहित्य की परम्परा शुरू होती है। इसमें कई सारे कवियों तथा साहित्यकारों का शिष्ट साहित्य है। पंचपरगनिया पंचपरगना क्षेत्र का प्रमुख भाषा है। किसी भी भाषा का साहित्य सर्वप्रथम पद्य से प्रारंभ होता है। पंचपरगनिया का पद्य साहित्य भी काफी समृद्ध है किन्तु सशक्त साहित्य की कसौटी उनकी पद्य तथा गद्य विधाओं का संतुलित समानान्तर विकास है।

पंचपरगना क्षेत्र में साहित्यकारों ने अथक परिश्रम कर पंचपरगनिया भाषा को साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित किया है तथा अनेक विषयों पर रचनाएँ हुई है परन्तु पंचपरगनिया भाषा में आज तक पंचपरगनिया साहित्य के विकास में आधुनिक साहित्यकारों का योगदान में शोध कार्य नहीं हुआ है।

अतः मैं पंचपरगनिया भाषा संबंधी साहित्यकारों की कृतियों एवं मूल्यपरक विषय वस्तु का संकलन अध्ययन एवं विश्लेषण कर पंचपरगनिया भाषा साहित्य के उपादानों को क्रमबद्ध करके अपने समाज को समर्पित करना चाहता हूँ जो पंचपरगनिया भाषा समाज के लिए एक अमुल्य निधि होगी। इस विषय पर शोध प्रस्तुत करने पर पंचपरगनिया भाषा के विकास को गति तथा दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

प्रेरणा:-

मैंने पंचपरगनिया भाषा में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त किया है। इसलिए मुझे अध्ययन काल से ही मुझे पंचपरगनिया भाषा के विद्वानों के लोक साहित्य एवं शिष्ट साहित्य के विविध विद्याओं को अध्ययन करने का अवसर मिला। मैं स्नातकोत्तर के अध्ययन के दौरान ही सोचा था कि यदि मुझे भी भविष्य में कभी शोधकार्य करने का अवसर प्राप्त हो तो मैं पंचपरगनिया साहित्य के विकास में आधुनिक साहित्यकारों का योगदान पर शोध करूँगा और यह सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। आज पंचपरगनिया भाषा साहित्य में पद्य के साथ - साथ गद्य नाटक, कहानी, उपन्यास और आधुनिक परिवेश से जुड़ी कई विद्याओं की धारा प्रवाहित हो रही है। इसे आगे बढ़ाने में अनेकों साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है।

परिकल्पना:-

पंचपरगनिया भाषा साहित्य के विकास में पंचपरगनिया विद्वान क्यों, कैसे, कब प्रेरित हुए, ये कार्य क्यों किया ? कैसे किया ? किन - किन विद्याओं पर कार्य किया ? उन्हें इसमें कितनी सफलता मिली, इसका समाज में क्या प्रभाव पड़ा ? इन सब कार्यों का मूल्यांकन करते हुए उन विद्वानों एवं विशेषज्ञों द्वारा रचित रचनाओं को विश्लेषणात्मक अध्ययन कर विशिष्ट रूप से प्रस्तुत करने का योजना मन में है जिससे साहित्य में अभिरूचि के साथ - साथ भाषा ज्ञान की क्षमता एवं योग्यता का विकास होगा।

शोध कार्य का उद्देश्य:-

1.) पंचपरगनिया साहित्यकारों का परिचय।

2.) पंचपरगनिया भाषा के विकास में आधुनिक साहित्यकारों के योगदान को जन-मानस तक पहुँचाना।

3.) पंचपरगनिया साहित्यकारों का विश्लेषण करना।

4.) पंचपरगनिया में वर्णित सभी साहित्यिक रूपों को बतलाना।

5.) पंचपरगनिया साहित्यकारों का विस्तृत चर्चा करना।

6.) पंचपरगनिया साहित्यकारों का समाज में प्रभाव को बतलाना।

शोध का महत्व:-

किसी शोध कार्य प्रारंभ करने हेतु शोध संबंधी महत्व की जानकारी अतिआवश्यक है। मेरे शोध का निम्नलिखित महत्व है:-

1.) शोध से पंचपरगनिया साहित्यकारों का झुकाव बढ़ेगा।

2.) शोध से पंचपरगनिया साहित्य एवं संस्कृति का विकास होगा।

3.) पंचपरगनिया साहित्यकारों एवं संस्कृति से जुड़े आगामी शोधार्थियों हेतु मार्ग प्रशस्त होगा।

4.) जन-मानस में अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम बढ़ेगा।

5.) वृहत रूप से पंचपरगनिया साहित्यकारों के क्रियाशीलों का विश्लेषण होगा।

6.) आधुनिक काल के पंचपरगनिया साहित्यकारों के कार्यों का मूल्यांकन होगा।

7.) झारखण्डी साहित्यकारों पर शोध कार्य मील का पत्थर साबित होगा।

शोध का समाज पर प्रभाव:-

प्रस्तुत शोध ग्रंथ में आधुनिक काल के पंचपरगनिया साहित्यकारों का पूर्ण विश्लेषण निहित होगा। इसमें जनता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा एवं इस शोध से अनेक नैतिक तत्व उजागर होंगे जो नये शोधार्थियों के लिए सहायता प्रदान करेगा। पंचपरगनिया भाषा की गरिमा बढ़ेगी और समाजिक विकास होगा।

शोध विधि:-

1.) अवलोकन विधि

2.) सर्वेक्षण विधि

3.) विश्लेषणात्मक विधि

4.) साक्षात्कार विधि

5.) प्रश्नावली विधि

उपकरणः-

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्न सामाग्रियों का उपयोग किया जा सकता हैः-

1.) शोध से संबंधित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएँ, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।

2.) पत्र - पत्रिकाएँ।

3.) टेप रिकॅार्डर - साक्षात्कार कार्य हेतु।

4.) मोबाईल - व्यक्तिगत सम्पर्क हेतु।

5.) कम्प्यूटर - विस्तृत क्षेत्र में जानकारी हेतु।

6.) इंटरनेट से सामग्री की शोध।

7.) अपने शोध निदेशक से समय - समय पर निर्देश।

8.) कैमरा - कुछ आवश्यक चित्र को चित्रित करने के लिए।

शोध कार्य की प्रासंगिकताः-

पंचपरगनिया साहित्य के विविध विषयों पर शोध कार्य हुए हैं, परन्तु पंचपरगनिया साहित्य के विकास में आधुनिक काल के साहित्यकारों का योगदान पर पूर्व में शोधकताओं ने चर्चा नहीं किया है। मेरे इस शोध कार्य से पंचपरगनिया साहित्यकारों के सहयोग से पंचपरगनिया का नया स्वरूप लोगों के समक्ष उपस्थित होगा

पूर्व में किये गये अध्ययन और अनुसंधान:-

पंचपरगनिया भाषा साहित्य के क्षेत्र में बहुत पहले से ही कार्य होता रहा है, परन्तु पंचपरगनिया साहित्य के विकास में आधुनिक साहित्यकारों का योगदान पर आज तक शोध कार्य नहीं हो पाया है। पंचपरगनिया साहित्यकारों पर शोध कार्य आवश्यक है।

पंचपरगनिया भाषा में अब तक में जो पीएच0 डी0 की उपधि प्राप्त है, वह निम्नलिखित है:-

1.) डॉ. सुनीता कुमारी गुप्ता - पंचपरगनिया लोक साहित्य।

2.) डॉ. करमचन्द्र अहीर - पंचपरगनिया भाषा का व्याकरण: एक अध्ययन।

3.) डॉ. अपर्णा कुमार महतो - पंचपरगनिया लोकगीत: एक अध्ययन।

4.) डॉ. अम्बिका स्वाँसी - पंचपरगनिया लोकगीतों में जन जीवन।

5.) डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह - पंचपरगनिया लोकगीतों का सौंदर्य बोध।

6.) डॉ. पूर्णचन्द्र सिंह मुण्डा - पंचपरगनिया साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन।

7.) डॉ. प्रवीण कुमार - पंचपरगनिया लोकगीतों का वर्णनात्मक अध्ययन।

8.) डॉ. पराग किशोर सिंह - पंचपरगनिया लोक कथाओं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन।

9.) डॉ. मनोज कुमार - पंचपरगनिया लोकगीतों में रस विधान।

10.) डॉ. दीनबंधु महतो - ज्योतिलाल महादानी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

11.) डॉ. अशोक कुमार महतो - पंचपरगनिया शिष्ट साहित्य: एक अध्ययन।

12.) डॉ. प्रभुदयाल सिंह मुण्डा -पंचपरगनिया लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन।

13.) डॉ. सबिता कुमारी मुण्डा - डॉ. करमचन्द्र अहीर: व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

14.) डॉ. बासुदेव महतो -पंचपरगनिया कुरमाली और नागपुरी का व्याकृत तुलनात्मक अध्ययन

15.) डॉ. गोविन्द महतो - पंचपरगनिया लोक काव्य में प्रेम और शृंगार: एक अध्ययन।

16.) डॉ. नरेन्द्र कुमार दास - पंचपरगनिया काव्य में भक्ति और अध्यात्म: एक अध्ययन।

अध्यायीरण

पीएच0 डी0 हेतु शोध प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

पंचपरगनिया साहित्य के विकास में आधुनिक साहित्यकारों का योगदान: एक अध्ययन

प्रस्तावना -

- शोध की प्रेरणा
- शोध का औचित्य
- विषय - सीमा
- शोध विधि
- विषय से संबंधित पूर्व शोध कार्य की समीक्षा

प्रथम अध्याय -

पंचपरगनिया साहित्य का सामान्य परिचय

क) पंचपरगनिया साहित्य का उद्भव एवं विकास

ख) पंचपरगनिया के प्रमुख आधुनिक साहित्यकार एवं उनका साहित्य

द्वितीय अध्याय -

पंचपरगनिया के प्रमुख आधुनिक पद्यकार

क) प्रमख कवियों का परिचय

ख) गीत

ग) कविता

तृतीय अध्याय -

पंचपरगनिया के प्रमुख आधुनिक कहानीकार

क) ज्योतिलाल महादानी

ख) परमानन्द महतो

ग) डॉ. करमचन्द अहीर

घ) संतोष साहु 'प्रीतम'

ङ) डॉ. चन्द्रमोहन महतो

च) डॉ. दीनबंधु महतो

चतुर्थ अध्याय -

पंचपरगनिया के प्रमुख आधुनिक नाटककार और उनके नाटक

क) चेंग मुड़ी कानी - राजकिशोर सिंह 'बुंडूआर'

ख) जुलुम - सृष्टिधर महतो

पंचम् अध्याय -

पंचपरगनिया के प्रमुख आधुनिक उपन्यासकार और उनके उपन्यास

क) माँ माटी मानुस - राजकिशोर सिंह ''बुंडूआर' '

ख) परास केर फूल - संतोष साहु 'प्रीतम' '

ग) इंजत - राजकिशोर सिंह 'बूंडूआर' '

षष्ठ अध्याय -

पंचपरगनिया के प्रमुख आधुनिक निबंधकार और निबंध रचनाएँ

क) डॉ. दीनबंधु महतो

ख) डॉ. करमचन्द्र अहीर

ग) सृष्टिधर महतो

घ) ज्योतिलाल महादानी

ङ) राजकिशोर सिंह

उपसंहार:-

परिशिष्ट:-

क. आधार ग्रंथों की सूची

ख . सहायक ग्रंथों की सूची

ग. पत्र - पत्रिकाओं की सूची

घ. साक्षात्कार सूची

ङ. चित्रावली

नोट:- आवश्यकतानुसार शोध प्रस्ताव में आंशिक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

शोध निर्देशक: **शोधार्थी:**

डॉ. पार्वती मुन्डू
सहायक प्राध्यापिका
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय धुर्वा, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

रमेश पातर
एम.ए. यू.जी.सी- नेट / जे.आर.एफ.
स्नातकोत्तर पंचपरगनिया विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची -

01 गोस्वामी डॉ. श्रवण कुमार, नागपुरी शिष्ट साहित्य रिसर्च पब्लिकेशन्स, दिल्ली 1972

02 डॉ. प्रमाणिक मंजय, कुरमाली साहित्य का इतिहास झारखण्ड झरोखा, राँची 2016

03 प्रसाद डॉ. दिनेश, लोक साहित्य और संस्कृति, प्रथम संस्करण, इलाहाबाद 1973

04 महतो अशोक कुमार, पंचपरगनिया शिष्ट साहित्य: एक अध्ययन

05 मुण्डा पूर्ण चन्द्र सिंह, पंचपरगनिया साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन झारखण्ड झरोखा, राँची 2010

06 मुण्डा विष्णुचरण सिंह, पं0 साहित्य का इतिहास

07 साहु विजय कुमार, नागपुरी साहित्य में झारखण्ड की संस्कृति

सहायक ग्रंथों की सूची-

01 अहीर डॉ. करमचन्द्र, उँजरा भइर फुल, चाईबासा 2005

02 अहीर डॉ. करमचन्द्र ,साहित्य एवं संस्कृति (पांडूलिपि)

03 अनुज भुवनेश्वर, नागपुरी लोकसाहित्य, प्रथम संस्करण इलाहाबाद 1992

04 आचार्य विश्वनाथ, साहित्य दर्पण, विमला टीका,दिल्ली 1961

05 उपाध्याय कृष्णदेव, लोक संस्कृति की रूपरेखा, प्रथम संस्करण, इलाहाबाद 1988

06 केशरी विसेश्वर प्रसाद, झारखण्डी भाषाओं का समस्याओं और संभावनाएँ, प्रथम संस्करण, राँची, 1992

07 केशरी विसेश्वर प्रसाद, नागपुरी भाषा और साहित्य, कमल प्रकाशन,राँची 1971

08 डॉ. कुलदीप, लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन, प्रथम संस्करण 1986

09 प्रमाणिक डॉ. मंजय, कुरमाली साहित्य का इतिहास, झारखण्ड झरोखा, राँची 2016

10 महतो डॉ. चन्द्रमोहन, गइद-पइद जहड़न

11 महतो डॉ. चन्द्रमोहन रावण-वध, जनजातीय भाषा अकादमी राँची 1990

12 महतो डॉ. चन्द्रमोहन, दूई डाइर बारो बरन फूल, मोहन बुक डिपो धुर्वा मोड़, बुण्डू 1992

13 महतो दीनबन्धु, संस्कृतिक निबंध, झारखण्ड झरोखा 2017

14 महतो दीनबन्धु, भिनु-भिनु डाइर (पांडूलिपि), झारखण्ड झरोखा 2012

15 महतो परमानन्द, पंचपरगनिया भाषा, जनजातीय भाषा अकादमी राँची 1990

16 महतो परमानन्द, जीवन पथेक फूल , जनजातीय भाषा अकादमी राँची 1990

17 महतो परमानन्द, पूस पीठा 2010

18 महतो परमानन्द, पंचपरगनिया लोक साहित्य और संस्कृति, जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची 2012

19 महतो राधा गोविन्द, झारखण्डी लोक संस्कृति, भैरव पुस्तकालय

20 सिंह राजकिशोर, इंजत-पंचपरगनिया उपन्यास, समुन्द्रन प्रेस, राँची 2012

21 सिंह राजकिशोर, माँ माटी मानुस, पृथ्वी प्रकाशक, दिल्ली 2017

22 सिंह राजकिशोर, नाया सोंच काव्य संग्रह, समुन्द्रन प्रेस, राँची 2012

23 सिंह राजकिशोर, तुलसी चाउरा, निबंध, झारखण्ड झरोखा 2015

24 सिंह राजकिशोर, सिबुबारात (पंचपरगनिया महाकाव्य)

25 सिंह राजकिशोर, पंचपरगनिया लोकगीत संग्रह (पांडूलिपि)

26 सिंह राजकिशोर, मेसा कोसा, पं0 भाषा विकास केन्द्रीय समिति 2005

पत्र - पत्रिकाओं की सूची-

01 अहीर डॉ. करमचन्द्र, बिहान, के0 वि0 स0 बुण्डू - 1984

02 आज, हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, राँची

03 जनमानस, तमाड़

04 टेटे वंदना, आखड़ा, राँची

05 दैनिक जागरण, हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, राँची

06 दैनिक भास्कर, हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, राँची

07 प्रभात खबर, हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, राँची

08 राँची एक्सप्रेस, हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, राँची

09 राधाकृष्ण, आदिवासी, राँची- 1960

10 राय सुबोध बसु, क्षत्राक, राँची

11 सं0 कुमार अनिल, साहिया, बोकारो- 2002

12 सं0 कुशवाहा फाल्गुनी मरीक, सहिदान, गिरिडीह- 2002

13 सं0 कुशवाहा फाल्गुनी मरीक, करील, ओरमांझी, राँची - 2009

14 सं0 पाण्डेय शिवनंदन ‘गरीब, धरतीथान, गिरिडीह- 2009

15 सं0 प्रबुद्ध महेन्द्र, परासफूल, धनबाद- 2009

16 हिन्दुस्तान, हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, राँची